सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, मार्च-अप्रैल 2019

परमेश्वर का मुक्ति देनेवाला प्यार

"उस ने कहा, हे प्रभु, किसी ने नहीं: यीशु ने कहा, मैं भी तुझ पर दंड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना॥" (यूहन्ना 8:11)।

परमेश्वर के बच्चे दूसरों की निंदा नहीं करते बल्कि सुधार करते हैं। निंदा और सुधार दो अलग-अलग चीजें हैं। प्राकृतिक मनुष्य अपने को छोड़कर, हर मनुष्य की निंदा करता है । एक आध्यात्मिक व्यक्ति स्वयं की निंदा करता है और दूसरों के कार्यों की बहुत अनुकूल व्याख्या करता है। यीशु ने कहा कि वह दुनिया पर दोष लगाने नहीं आया। दुनिया पर पहले से ही दोष लग चुका है। आगे और दोष लगाने की कोई जरूरत नहीं है।

"जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर

.....मुक्ति देनेवाला प्यार.. पृष्ठ 2 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

TV - Star Utsav

चैनल पर

*हर **रविवारसुबह 7:30 से 8:00** बजे*

वह हमारे अपराधों के लिए घायल हुआ

"परन्तु वह हमारे ही अपराधो के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएं।" (यशायाह 53: 5)।

यशायाह की किताब में, अध्याय 53 में, हमें बेजोड़ सुंदरता और मार्मिकता के पवित्रशास्त्र का एक भाग मिलता है। कृपया पूरे भाग को पढ़ें, जहां, इतनी स्पष्ट रूप से और चित्र के रूप में यशायाह ने मसीह की मृत्यु की भविष्यवाणी की। लेकिन इस बात को ध्यान में रखिए कि इस घटना के सात सौ साल पहले यशायाह ने भविष्यवाणी की थी। यह बाइबल का एक और अनूठा पहलू है। भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी की कि सारी मानव जाति के उद्धारकर्ता आएँगे और मनुष्य के पाप के लिए सर्वोच्च बलिदान बनेंगे।

मानव के दिल में गहरी बैठी इच्छा कि किसी भी तरह से मनुष्य के विद्रोह और पाप पर परमेश्वर के क्रोध को कैसे दूर किया जाए, जो विभिन्न प्रकार के बलिदानों के रूप में सामने आती है। इनमें से कई बलिदानों का उद्देश्य मनुष्य के पाप का प्रायश्चित करना था। लेकिन कोई भी भेंट, चेतन या निर्जीव, महंगा या सस्ता कैसे पवित्र परमेश्वर के दिल को खुश करे, जिसके सामने हमारे पाप बहुत घृणित और अथाह आक्रामक हैं? यह समझ से बाहर है कि हम कुछ उपहार के द्वारा जीवित परमेश्वर को खुश कर सकते हैं और स्वर्ग के लिए अपना रास्ता खरीद सकते हैं।

लेकिन परमेश्वर ने बलिदान के लिए मेम्ने को तैयार किया — उसका अपना बेटा, जो उसके व्यक्ति की व्यक्त छवि है। इस प्रकार जब हम आशा के बिना थे, तब उद्धारकर्ता आया। येरुशलम की दीवारों के ठीक बाहर कलवारी नामक स्थान पर, उन्होंने हमारे पापों और सभी मानव जाति के पापों के लिए बलिदान के रूप में अपना जीवन दिया। यह एक क्रूर क्रॉस था, वो अस्वीकार किया, उसका तिरस्कार किया, उस पर थूका और उस की निंदा की, और वह मर गया।

कलवरी के क्रॉस की विशाल कीमत की गणना करना असंभव है। पाप उसके लिए परदेशी था — वह पाप से अनजान था। फिर भी उसने आपके पापों और मेरे पापों को अपने ऊपर ले लिया। यहां तक कि हम साधारण मनुष्यों को भी समय-समय पर हमारे पापों से घृणा होती हैं और यहां तक कि कई व्यर्थ संकल्प करते हैं कि वे फिर से खुद को गंदा न करेंगे, हालांकि संकल्प व्यर्थ ठहरता है। लेकिन निष्पाप उद्धारकर्ता स्वर्ग के पवित्र माहौल को छोड़कर आपके और मेरे साथ खुद की पहचान करने के लिए नीचे आया। यह अपने उच्चतम और शुद्धतम स्तर पर प्यार है।

बाइबल कहती है, "और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।" (फिलिप्पियों 2: 8)। मनुष्य के पाप के लिए दंड का भुगतान करने के लिए, उसे खुद को और विनम्र करना पड़ा और अमर को मृत्यु का आक्रोश सहना पड़ा और वह भी एक अपराधी की मृत्यु।

उनके अपने शिष्य यहूदा इस्कैरियोती ने उन्हें धोखा दिया और उन्हें चांदी के तीस टुकड़ों के लिए सीधे-सीधे बेच दिया। आज बहुत से ऐसे हैं जिन्होंने मसीह को उससे कम पैसे में धोखा दिया।

उन सभी लालच के बारे में सोचें जो हमारे बीमार आधुनिक समाज ने पैदा किए हैं। झूठ उनके लिए कुछ भी नहीं है; धोखा एक खेल है; उनके शरीर वे अनैतिकता में लगा देंगे; अपनी आत्माएँ वे धन को प्राप्त करने में बेच देंगे।

यहूदा को पैसे और मसीह के बीच चयन करना था; उसने पैसे चुने। कई लोग, यहूदा की तरह, आज पैसे चुनते हैं और नैतिक मूल्यों को फेंक देते हैं और अपनी आत्मा को शैतान के हाथ सौंप देते हैं।

"वह तुच्छ जाना गया और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दु:खी पुरूष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी; और लोग उस से मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और, हम ने उसका मूल्य न जाना।।" (यशायाह 53: 3)। ये शब्द आज भी कितने दुखद सत्य हैं! जब तक यीशु नहीं आया तब तक परमेश्वर मनुष्य के साथ रहने के लिए मनुष्य के रूप में नहीं आया; जब तक यीशु धरती पर नहीं आया, तब तक एक ऐसा इंसान पृथ्वी पर नहीं चला, जो पापरहित और अशुद्धता से अछूता रहा हो; और फिर भी वह खारिज कर दिया गया और जिसका पुरुषों द्वारा तिरस्कार किया गया। उनकी अतुलनीय पवित्रता लोगों की अशुद्धता के ऊपर गंभीर रूप से डाँट थी, इसलिए आज भी लोग, यीशु के अलावा किसी ओर को चाहते हैं।

यह उनका कोई अपना पाप नहीं था जो इस शर्मनाक मौत को उनके ऊपर लाया। वह हमारे अपराधों और पाप के लिए घायल हुआ था। अपने शरीर पर हमारे पापों को लेने से न केवल उनको शारीरिक कष्ट हुआ, बल्कि वो उनकी आत्मा पर एक कुचलने वाला भार था।

मैं समझाता हूं। एक सेना शिविर में सैनिकों में से किसी ने तंबू में अपराध किया गया था। मेजर एक सख्त व्यक्ति था और चाहता था कि अपराधी अपने अपराध खुद कबूल करे क्योंकि तम्बू में किसी को तो जुर्माना भरना होगा। भारी कोड़े से उसे 50 कोड़े झेलने पड़ेंगें। लगभग हर कोई जानता था कि अपराधी कौन है लेकिन किसी ने भी अपराध को स्वीकार नहीं किया। अधिकारी ये देखकर चकित हुआ कि, विली, नाटा ढोल बजाने वाला लड़का आगे आया और उसे कोड़े मारने को कहा।

यह एक क्रूर दृश्य था। क्योंकि यह एक कमजोर लड़का था, जो भारी कोड़े के नीचे था तो जुर्माना कम गंभीर नहीं हो सकता है। जब तक कोड़ों की मार की गिनती चल रही थी, विली ने बहादुरी से तब तक कोड़े खाए, जब तक कि वह और नहीं सहन कर पाया। असली अपराधी बाहर निकल गया जब उससे निर्दोष विली को कोड़े की मार खाते हुए देखना और सहन न हुआ। लेकिन फिर भी विली को पूरा जुर्माना भरना पड़ा।

विली कभी भी कोड़े की मार से उबर नहीं पाया। विली की मृत्यु-शय्या पर, असली अपराधी रॉबर्ट रोते हुए यह कहते पाया गया, "विली, तुमने ऐसा क्यों किया, तुमने मेरी मार क्यों सही?"

अब, छोटा ढोल बजाने वाला लड़का विली, यीशु से प्यार करता था और बस महसूस किया कि उसे रॉबर्ट की कोड़ों की मार की सजा अपने ऊपर लेनी है, हालाँकि इससे उसकी जान चली गई।

जी हाँ, हमारे अनमोल प्रभु यीशु ने हमारे पापों को अपने शरीर पर ले लिया और हमारे स्थान पर मर गए, ताकि हम अपने पापों से मुक्त हो सकें और इस सबसे सुंदर और विजयी जीवन जी सकें, जो वह देता है।

—जोशुआ दानियल

.... मुक्ति देनेवाला प्यार पृष्ठ 1 से

विश्वास नहीं किया।" (यूहन्ना 3:18)। ईसा मसीह दुनिया को दण्ड देने नहीं बल्कि दुनिया को बचाने आए हैं। "यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता, क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के लिये नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिये आया हूं।" (यहून्ना 12:47)। यह

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books, Lal Building, Goa Street, Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

बचाने वाला प्रेम है - निंदा या आरोप लगाने वाला प्रेम नहीं। वचन स्वर्ग में स्थापित है। शाश्वत वचन परमेश्वर के बराबर है। उस वचन से दुनिया को आंका जाता है और उस पर दोष लगाया जाता है। यीशु ने मनुष्य की गिरी हुई प्रकृति को समझा, जो विभिन्न प्रलोभनों में पड़ सकता है। लेकिन अगर यह क्रूस के काम के तहत आता है, तो उसका मन पाप की ओर से फिर कर पवित्रता में बदल जाएगा।

फिर दुनिया पर दोष लगाने वाला कौन है? "... क्योंकि हमारे भाइयों के उपर दोष लगाने वाले को नीचे गिरा दिया गया है, जो हमारे परमेश्वर के सामने दिन और रात उन पर आरोप लगाता रहता हैं" (प्रकाशितवाक्य 12:10)। आरोप लगाने वाला रवैया ईसाई रवैया नहीं है। कभी-कभी हम वचन के लिए अपने महान उत्साह के कारण गलतियाँ कर बैठते हैं। जिन शब्दों का हम इस्तेमान करते हैं उन शब्दों के चुनाव के प्रति सावधान रहना चाहिए। हमारे शब्द स्वाभाविक मनुष्य के शब्दों की तरह आरोप लगाने वाले नहीं होने चाहिए। शैतान अभियोगी है। जिस क्षण हम पाप करते हैं, वह हमें परमेश्वर के सामने आरोपित करता है। जब हम पाप करते हैं, तो वह कहता है कि हम उसके हैं। शैतान ने मूसा के शव के लिए विवाद किया। " परन्तु प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल ने, जब शैतान से मूसा के शव के विषय में वाद-विवाद किया, तो उस को बुरा भला कहके दोष लगाने का साहस न किया; पर यह कहा, कि प्रभु तुझे डांटे। (यहूदा .19)

जब हम परिवर्तित होते हैं तो हम हर किसी को, विशेष रूप से हमारे रिश्तेदारों को परमेश्वर के पास लाना चाहते हैं। लेकिन हमारे प्रियजन विरोध कर सकते हैं। जितना अधिक हम प्रयास करते हैं, उतना ही वे विरोध करते हैं, और हम दुखी निराश होते हैं। लेकिन आपके जीवन और आपके ऊपर आए बदलाव का उन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। आप जितने अधिक धैर्यवान होंगे, आपका जीवन उतना ही शक्तिशाली होगा। प्रभु ने मुझे बताया, जब मैं एक युवा था कि लोगों में दिखने वाली सारी कमियों की ओर मुझे उंगली नहीं उठानी चाहिए। उन्होंने कहा, "आप उन्हें दुश्मन बना देंगे।"

"यदि कोई बोले, तो ऐसा बोले, मानों परमेश्वर का वचन है; यदि कोई सेवा करे; तो उस शक्ति से करे जो परमेश्वर देता है; जिस से सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर की महिमा प्रगट हो: महिमा और साम्राज्य युगानुयुग उसी का है। आमीन। " (1 पतरस 4:11) जब हम पवित्र आत्मा के निर्देशों का पालन करते हैं, तो हम परमेश्वर के प्रवक्ता बन जाते हैं। हमारी सलाह लोगों को बदलने के लिए एक प्रेरणा बन जाती है। यीशु की अजीब पवित्रता और पवित्रता पापियों को दूर नहीं भगाती थी, बल्कि आकर्षक थी। प्राकृतिक मनुष्य की धार्मिकता दूर भगाती है लेकिन आध्यात्मिक व्यक्ति की धार्मिकता आकर्षक है। यदि आप में मसीह है, तो आप पापियों को आकर्षित करते हैं और आप में शक्ति उनकी बुराई को बेअसर करने और उन्हें पवित्रता प्रदान करने में सक्षम है।

- एन. दानियल

प्रार्थना से मनुष्य को हिलाना

हडसन टेलर उन्नीसवीं सदी में चीन के लिए एक मिशनरी था। उन्होंने महसूस किया कि इंग्लैंड छोड़ने से पहले सबसे महत्वपूर्ण तैयारी उनकी आत्मा में होनी चाहिए। चीन में उसे हर चीज के लिए अपने परमेश्वर पर निर्भर रहना होगा। ऐसा न हो कि असफलता बाद में उस पर हावी हो जाए, उसने मुक्तिदाता के वादे को अच्छी तरह से परखने का दृढ़ निश्चय किया: " और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।" (यूहन्ना 14:13)। उन्होंने सीखने का संकल्प लिया, जैसा कि उन्होंने कहा, "इंग्लैंड छोड़ने से पहले, मनुष्य को ईश्वर के माध्यम से, अकेले प्रार्थना द्वारा चलाने के लिए।"

उन्होंने अपने वेतन के सापेक्ष एक विशिष्ट स्थिति में परीक्षण किया। उसके काम देने वाले ने हडसन से कहा था कि जब भी उसकी तनख्वाह बने, उसे याद दिलाएं। यह बात हडसन ने पूरी तरह से प्रभु के हाथों में छोड़ दी, और तनख्वाह मिलने का समय आ गया।

एक शनिवार की रात को अपने खाते का हिसाब लगाने पर उन्होंने खुद को केवल एक सिक्के के साथ पाया। अगले दिन परमेश्वर ने उसकी परीक्षा ली। वह एक बहुत ही गरीब दम्पत्ति से मिला और उनके पास खाने को भी पैसा नहीं था, उसने यह कहते हुए इस दम्पत्ति को आराम देने की कोशिश की कि एक दयालु और प्यार करने वाला पिता स्वर्ग से नीचे देख रहा है। फिर भी जब उसने उनके लिए प्रार्थना करने के लिए नीचे घुटने टेके और उसने कहा, "हे हमारे पिता", उसने एक आवाज सुनी, "क्या आप परमेश्वर का मजाक उड़ाते हैं?" हिम्मत करके तुम घुटने टेककर उन्हें हमारे पिता कहते हो, और जबकि अपनी जेब में उस आधे पाऊँड के सिक्के को रखे हो।" प्रार्थना को पूरा करते हुए, वह उठा और जेब से सिक्का निकाल कर उन्हें दिया। अब वह उन्हें इस बात की गवाही दे सकता था कि परमेश्वर वास्तव में एक पिता है और उस पर विश्वास किया जा सकता है — और उसका दिल भरपूर आनन्द से पूरी तरह भर गया!

अगली सुबह उनकी मकान मालकिन ने उन्हें एक पत्र दिया जिसमें उच्च मूल्य का एक सिक्का था। "परमेश्वर की स्तुति करो!" उन्होंने कहा। "बारह घंटे के निवेश के लिए चार सौ प्रतिशत

ब्याज!" उन्होंने सीखा कि स्वर्ग का बैंक हमेशा भरोसेमंद है और अच्छे लाभांश का भुगतान करता है।

प्रार्थना की शक्ति में उनका विश्वास बहुत मजबूत हुआ, लेकिन दो सप्ताह के दौरान उनका पैसा खर्च हो गया और अभी भी वेतन नहीं मिला था। उन्होंने प्रार्थना में परमेश्वर के साथ कुश्ती करने के लिए बहुत समय दिया। फिर एक निराशा के बाद, टेलर एक शांत जगह पर गया और अपने दिल को प्रभु के सामने रख दिया - और उस रात को चमत्कारिक रूप से भुगतान किया गया। अपनी भावनाओं को दिखाए बिना, वह अपनी छोटी कोठरी में वापस चला गया और प्रसन्न मन से प्रभु की प्रशंसा की कि आखिरकार वह चीन जा सकता है।

यह जगह उसके लिए दिल का एकमात्र सपना बन गई। वह 1853 में मसीह के राजदूत के रूप में वहां गए। यूहन्ना 14:13 इंग्लैंड की तरह वहाँ भी सच ठहरेगा!

ई. मायर्स हैरिसन द्वारा – विश्वास के वीर - पायनियर ट्रेल्स पर।

मुझे पता है कि मेरा उद्धारक ज़िंदा है

"चैपलेन, हमारा एक लड़का बुरी तरह से घायल है, और तुम्हें तुरंत मिलना चाहता है।" सिपाही के पीछे चलते, मुझे अस्पताल ले जाया गया और एक बिस्तर के पास ले जाया गया, जहाँ एक जवान आदमी, पीला और खून से सनी हुई भयानक हालत में पड़ा था। माथे के ऊपर घाव। मैंने एक नज़र देखा कि उसके पास जीने के लिए कुछ ही घंटे हैं।

उसका हाथ पकड़ते हुए, मैंने कहा, " बता मेरे बच्चे, मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ?" उसने मेरे चेहरे की ओर देखा, और कहा, "अब, चैप्लिन, मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे पास ही घुटने टेक दो और परमेश्वर को धन्यवाद दो।"

"किस बात के लिए?" मैंने पूछा।

"मुझे ऐसी माँ देने के लिए। हे, चैपलिन, वह एक भली माँ है; उसके उपदेशों ने मुझे सुकून दिया और अब मुझे सांत्वना दी। और चैपलेन, परमेश्वर का शुक्र है कि उनकी कृपा से मैं ईसाई हूँ। ओह, अगर मैं ईसाई नहीं होता तो अब मैं क्या करता! मुझे पता है कि मेरा मुक्तिदाता जीवित है। मुझे लगता है कि उनके समाप्त काम ने मुझे बचा लिया है। और, चैप्लिन, मुझे मरते हुए अनुग्रह देने के लिए परमेश्वर का शुक्र है। उन्होंने मेरे बिस्तर को बहुत नरम महसूस करवाया है जैसे कि नीचे तकिए हैं।' महिमा में वादा किए गए घर के लिए धन्यवाद। मैं जल्द ही वहाँ पहुँच जाऊँगा - वहाँ, जहाँ न कभी युद्ध होता है, न दुःख, न ही वीरानी, और न ही मृत्यु - जहाँ मैं यीशु को देखूँगा और हमेशा प्रभु के साथ रहूँगा। "

मैंने उसकी बगल में घुटने टेक दिए, और परमेश्वर को आशीर्वाद देने के लिए धन्यवाद दिया जो उन्होंने उस पर दिया था - एक अच्छी माँ, एक ईसाई आशा, और परमेश्वर की वफादारी की गवाही देने के लिए मरने के समय अनुग्रह का। प्रार्थना के कुछ समय बाद, उन्होंने कहा, "अलविदा, चैपलेन; यदि आप माँ को मिलें, तो उसे बताएं कि सबकुछ ठीक-ठाक है।"

प्रिय पाठक, क्या आपने सुसमाचार सुना है? मसीह हमारे पापों के लिए शास्त्रों के अनुसार मर गया। क्या आप मसीह में सच्चे विश्वासी हैं? या आप अभी तक बचाए नहीं गए हैं? ऐसे कब तक बने रहना है? क्या आप प्रभु यीशु के पास जाएंगे और उन्हें धन्यवाद देंगे कि वह आपके लिए मरा था? उसे धन्यवाद दो कि वह तुम्हारा उद्धारकर्ता है।

"मैं तुम से कहता हूं; कि इसी रीति से एक मन फिराने वाले पापी के विषय में परमेश्वर के स्वर्गदूतों के साम्हने आनन्द होता है।" (लूका 15:10)।

सत्य की परख!

"जिसमें (मसीह) हमें छुटकारा अर्थात पापों की क्षमा प्राप्त होती है।" (कुलुस्सियों 1:14)

माताओं, अपने बच्चों को सिखाने के लिए प्रोत्साहित रहो। इस युवा सैनिक को देखो। मत कहो, "मेरे पास कुछ नहीं है जो मैं मसीह के लिए कर सकती हूं।"

आपका काम कितना महत्वपूर्ण है, इन लड़कों और लड़कियों को प्रभु के डर में पालना। आप कमजोर हैं और आपके पास कोई ज्ञान नहीं है। हां, लेकिन प्रभु हमें वह सब देता है जो हमें उसकी सेवा करने के लिए चाहिए। और प्रभु यीशु के नाम पर सभी चीजों को करने के लिए अनुग्रह के लिए जीवन की दैनिक चहल-पहल को उज्ज्वल करता है, "और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो" (कुलु। 3:17)।

यदि धरती पर प्रभु आपके पास खड़े होते, तो क्या आप उनसे कहेंगे, "नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता?" क्या आप नहीं कहेंगे, "हाँ, परमेश्वर, आपकी कृपा से, मैं करूँगा।"

पुरस्कार मिलने के दिन आपके पास शानदार जवाब होगा।

"इस तरह की डोरियों से हम आगे बढ़ते हैं, जब तक हम सिंहासन नहीं पहुँच जाते, और प्रेम की जंजीरों में बंधे, हमारे उद्धारकर्ता के पैरों को गले लगाते हैं।"

- अनुग्रह की गूंज (1943-44)

एकमात्र रास्ता

"मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूं" (यूहन्ना 14: 6)

मसीह के रास्ते के बाहर भटकने के अलावा कुछ नहीं है; मसीह की सच्चाई के बाहर, त्रुटि के अलावा कुछ नहीं; मसीह के जीवन के बाहर अनन्त मृत्यु के अलावा और कुछ नहीं।

"उस पर आस लगाओ और मुक्ति पाओ।"

- अनुग्रह की गूंज (1943-44)

मसीह का अतुलय प्रेम

"आप कहां से पढ़ रहे हैं, मेरे प्रिय?" एक महिला ने एक दर्जी से कहा, जो नए नियम को पढ़ने में व्यस्त थी।

"मैं रोमियों के पांचवें अध्याय को पढ़ रही हूं," उसने आदरपूर्वक उत्तर दिया।

"आपने उस अध्याय को क्यों चुना हैं?" उसके दोस्त ने कहा।

"ओह, मैं इसमें बहुत खुश हूं।"

"किस कारण से?"

"क्योंकि," लड़की ने जवाब दिया, "यह सिर्फ मेरे मामले के अनुकूल है। देखिए, क्या यह आनंदमय नहीं है?" छठे पद की ओर इशारा करते हुए," क्योंकि जब हम अभी तक बिना ताकत के थे, तब तक नियत समय में मसीह मरा।" मैं वास्तव में एक पापी और बिना ताकत वाली हूं।" लड़की कहती रही, "लेकिन यहाँ उपाय है, 'मसीह पापियों की मुक्ति के लिए मरा।"

- अनुग्रह की गूंज (1943-44)

भ्रम से शांति तक

मेरा जन्म भारत देश में एक हिन्दू परिवार में हुआ था। मैं जाति प्रथा पर दृढ़ विश्वास रखता था। मैं युवावस्था से मूर्ति पूजा करता। जब मै छोटा लड़का था, मंदिरों में जाकर मूर्तियों के सामने झुकता। सात साल की आयु में, मेरा परिवार केनडा प्रवास कर गए। वहाँ भी मैं कुछ समय तक हिन्दू धर्म पर विश्वास कर रहा था। मगर छोटी आयु में ही, परमेश्वर के बारे मे अधिक जानने के लिए मै उत्सुक था। तब किसी ने मुझे मसीही धर्म के बारे में बताया था। मैंने चोरी-छिपे नये नियम (बाइबल) को पढ़ना शुरू किया। मैं नही चाहता था कि मेरे माँ-पिताजी या और कोई यह बात जाने।

उन दिनों में, मुझे यह भय था कि मृत्यु के बाद मेरा क्या होगा? मैं यह सोचता था कि क्या सचमुच स्वर्ग और नरक है? यीशु मसीह वास्तव में है कि नही? सच में परमेश्वर है भी या नही? इस प्रकार एक तरह से, मैं परमेश्वर की खोज कर रहा था। मगर जब मैं सातवी, आठवी और बाद में हाइ-स्कूल पहूँचा, मैं सांसारिक चीजों को खोजने लगा। और शारीरिक पापों ने प्रबल रूप से मुझ पर काबू कर लिया। मैं उस समय चर्च जाने से बहुत डरता था। मैं अश्लील पत्रिकाओं को पढ़ने लगा। मैं लड़कियों के पीछे भाग रहा था। मैं नाच-गाने और चलचित्र देखने लगा। मेरे विचार बहुत ही भ्रष्ट हो गये, क्योंकि मैं कई घंटे टेलिविजन देखता था। तब तक मैं 12 और 13 ग्रेड तक पहूचाँ, मैं एक भी लड़की को अच्छी नजर से भी नही देख पा रहा था। उस समर मैं हस्तमैथुन के पाप का दास बन गया था।

करीब दसवी कक्षा में, अपने डर पर काबू पाकर चर्च जाना शुरू किया। युवकों की सभा, और इतवार की आराधना में भाग लेना शुरू किया। क्योंकि मैं नियमित रूप से चर्च जाता था, वहाँ के लोग मुझे मसीही समझने लगे। यह कहने के लिए मैं आगे वेदी के पास आता था कि मैं मसीह को स्वीकार करता हूँ। जब निर्णय पूछा जाता तो मैं अपना हाथ उठाता था। मैं यह सब कर रहा था। फिर भी मेरी जिन्दगी में कोई परिवर्तन नहीं आया। मेरे अशुद्ध पापों से कोई छुटकारा नहीं था। जब तक मैं सभा में रहता, मुझे लगता था कि परमेश्वर वास्तव में है। जब मैं अकेले घर जाता, मेरा प्रार्थना का जीवन नही था। मैं बहुत ही खालीपन महसूस करता था। मैं यह सोचता था कि मसीही धर्म वास्तविक है कि नही। हाइस्कूल से बाहर आने के बाद मैं वॉटरलू के विश्वविद्यालय में पढ़ने लगा। मैं वहाँ कंप्यूटर विज्ञान की पढ़ाई कर रहा था। मैंने वहाँ विद्यालय के मैदान में हो रही विशाल मसीही सभाओं में जाना शुरू किया। क्योंकि मैं नियमित रूप से हाजिर होता और बहुत ही उत्साह से भरा था, उन्होंने मुझे बाइबल अध्ययन का नेता बना दिया। मैं दूसरों की अगुवाई करने लगा। मगर इन सब बातों के बावजूद मैं बहुत ही बेचैन रहने लगा। मैं बाइबल की प्रमाणिकता पर ही संन्देह करने लगा। मैंने कई लोगों से विभिन्न धर्मों के बारे में बाते कीं। और वे मुझ से कहने लगे कि उनका धर्म सच्चा धर्म है। मसीही धर्म असत्य है। मैं बहुत ही अनिश्चित था, क्योंकि मुझमें असली परिवर्तन के अनुभव का अभाव था।

कई साल चर्च जाने पर भी, किसी ने भी मुझे नही बताया कि मुझे अपने पापों से पश्चताप करने की और उन्हें छोड़ने की आवश्यकता है। परिणाम स्वरूप, जिस रास्ते से मैं परमेश्वर के पीछे जाने की कोशिश कर रहा था, वह बहुत ही असत्य लगने लगा। इसलिए जब यह लोग ऐसी-वैसी बाते कहने लगे, मैं उन पर विश्वास करने लगा। मैं बाइबल की प्रमाणिकता पर सन्देह करने लगा। मैं परमेश्वर के अस्तित्व पर ही सन्देह करने लगा। इस कारण मैंने अपने मन में यह निश्चय किया कि मैं बाइबल को फेंक दूँगा और किसी दूसरे धर्म की ओर फिरूँगा। इस समय पर, मैं अपनी उलझन में प्रार्थना करने लगा और माँगने लगा कि एक मात्र सच्चा परमेश्वर अपने आप को मुझ पर प्रकट करे - वह परमेश्वर जो मुझे मेरे पापों से मुक्त कर सकता है, वह परमेश्वर जो मुझे जिन्दगी में शान्ति और छुटकारा दे सकता है - वह परमेश्वर जिसके पीछे मैं चलना चाहता हूँ।

सन् 1981 के गरमी के मौसम में जब मैं यह प्रार्थना कर रहा था, लेमेन्स इवन्जलिकल फेलोशिप के एक भाई से मेरी मुलाकात हुई। उन्होंने मुझे बताया कि यीशु मसीह एक जीवित और बात करने वाला परमेश्वर है। और यह भी कि यीशु मसीह ही एक नौजवान को अपनी जवानी के दिनों में पाप से छुटकारा और विजय दे सकता है। मैं कई मसीही नेताओं के पास, कई नव

जवानों की सभा-समारोह में गया था, मगर किसी ने कभी भी मुझे यह नही बताया कि एक नौजवान के लिए पवित्र जीवन जीना संभव है। जब इस भाई ने इन विषयों के बारे में मुझे बताया, पहले तो मैं उस पर सन्देह करने लगा। क्योंकि वह भारत से आया था। मुझे लगा कि सुसमाचार केनडा से हिन्दुस्तान जाना चाहिए। और मुझे उनको सिखाना चाहिए। मैंने अपनी बाइबल-सभा में आने के लिए उसको न्यौता दिया ताकि मैं उनको सिखाऊँ। मगर जब उन्होने यह सारी बातें मुझे बताई, परमेश्वर के वचन ने मेरे हृदय में कार्य करना शुरू किया। जब मैं उस भाई से मिलकर प्रार्थना करने लगा और वे मुझ से बातें करने लगे, मैं अपने पाप की गहराई को जानने लगा। पहली बार, मैंने देखा कि मुझे परमेश्वर के सामने पश्चताप करने की जरूरत है। जब मैं प्रभु की सन्निधी में रहा और उनके वचन बाइबल को पढ़ा, परमेश्वर मुझे गहराई से दोषी सिद्ध करने लगे कि मुझे चुराई हुई चीजों को वापस लौटाना चाहिए। जैसे-जैसे परमेश्वर का आत्मा मुझे दोषी सिद्ध कर रहा था, मैं हर एक कदम पर परमेश्वर की बातें मानने लगा। मैंने अपने माता-पिता के पास जाकर माफ़ी माँगी क्योंकि मैं ने घर से पैसा चुराया था। मैं जिन स्थानों पर काम करता था, उन जगहों पर गया, और पैसा वापस किया, एक पेट्रोल पम्प पर भी। जिन लोगों से मैं झूठ बोलता था, उनके सामने नम्र होकर झूठ को स्वीकार कर लिया था।

परमेश्वर ने जिन सारे विषयों को दिखाया था, लोगों के सामने मान कर अपनी अन्तरात्मा को सही किया। और मैंने परमेश्वर के सामने गहराई से अपने आप को नम्र किया। तब मसीह का क्रूस मेरे सामने खड़ा हुआ। मैं ने देखा कि प्रभु यीशु मेरे पापों के लिए मरे है। एक अद्भुत आनन्द और शान्ति ने मेरी जिन्दगी पर काबू कर लिया। एक नयी सामर्थ मेरी जिन्दगी में आयी। परमेश्वर ने मेरे सारे पापों पर मुझे विजय दी। परमेश्वर ने मुझे मेरे विचारों पर विजय देना शुरू किया।

परमेश्वर ने मुझ से भजन संहिता (73:22-26) से बात कीं, कि उन्होंने मुझे माफ किया। वह इस तरह है: 'तब मैं निर्बुद्धि और नासमझ था, मैं तो तेरे सम्मुख जानवर ही था। फिर भी मैं निरनतर तेरे साथ हूँ; तू ने मेरा दाहिना हाथ थाम लिया है। अपनी सम्मति के द्वारा तू मेरी अगुवाई करेगा, और अन्त में मुझे महिमा में ग्रहण करेगा। स्वर्ग में मेरा और कौन है? तेरे सिवाय मैं पृथ्वी पर और कुछ नहीं चाहता। चाहे मेरा शरीर और मन दोनों हताश हो जाएं, फिर भी परमेश्वर सदा के लिए मेरे हृदर की चट्टान और मेरा भाग है।' जब मैंने इन शब्दों को पढ़ा, मैं सच में आनन्द और स्तुति से भर गया। दस से भी अधिक सालों की शंका और सवाल के बाद पहली बार मुझे मालूम पड़ा कि यीशु मसीह ही परमेश्वर तक पहुंचने के लिए एक मात्र मार्ग है।

इस के बाद परमेश्वर ने मुझे सिखाया कि कैसे प्रार्थना करें। परमेश्वर ने मुझे दिखाया कि मुझे अपने दिन का दसवां भाग प्रार्थना और बाइबल पढ़ने में बिताना चाहिए। उन्होंने यह भी सिखाया कि प्रभु के दिन को पवित्र रखें, उसे शुद्ध करें। सोमवार की सुबह परीक्षा होने पर भी, मैं शनिवार की रात को ही किताबें बन्द कर देता था। जब मैं इन विषयों में परमेश्वर की बातें मान रहा था, एक नया अनुग्रह मुझ में आया। और मेरे विचार इधर-उधर भटकने की बजाय, सप्ताह के बाकी छः दिन मैं अपनी पढाई में ध्यान देने लगा। मुझे आश्चर्य हुआ, जब परमेश्वर ने जिन विषयों की मैं पढ़ाई कर रहा था, उन में से कुछ में पूरी कक्षा में मुझे प्रथम स्थान मिला। इन सब के लिए मैं परमेश्वर की स्तुति करता था। परमेश्वर ने हर एक कदम पर मुझे सिखाना और मेरी अगुवाई करना शुरू किया। उन्होंने अपने जनों की संगति के द्वारा भी मुझे दृढ़ बनाया।

- विनय देशपांडे

प्रार्थना कैसे करें।

मत्ती अध्याय 5 - पवित्र बाइबल

5 और जब तू प्रार्थना करे, तो कपटियों के
समान न हो क्योंकि लोगों को दिखाने के
लिये सभाओं में और सड़कों के मोड़ों पर
खड़े होकर प्रार्थना करना उन को अच्छा
लगता है; मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे
अपना प्रतिफल पा चुके।
6 परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी
कोठरी में जा; और द्वार बन्द कर के अपने
पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर; और तब
तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल
देगा।
7 प्रार्थना करते समय अन्यजातियों की नाईं
बक बक न करो; क्योंकि वे समझते हैं कि
उनके बहुत बोलने से उन की सुनी जाएगी।
8 सो तुम उन की नाईं न बनो, क्योंकि
तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पहिले ही
जानता है, कि तुम्हारी क्या क्या आवश्यक्ता
है।
9 सो तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो;
"हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम
पवित्र माना जाए।
10 तेरा राज्य आए; तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग
में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।
11 हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।
12 और जिस प्रकार हम ने अपने
अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी
हमारे अपराधों को क्षमा कर।
13 और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से
बचा; क्योंकि राज्य और पराक्रम और
महिमा सदा तेरे ही हैं।" आमीन।
14 इसलिये यदि तुम मनुष्य के अपराध
क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी
तुम्हें क्षमा करेगा।
15 और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा
न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे
अपराध क्षमा न करेगा॥